

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 10, मसीह के साथ एकता के लिए आधार , जॉन का सुसमाचार 14 और 15

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके शिक्षण का अंश है। यह सत्र 10 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, जॉन का सुसमाचार, जॉन 14 और 15।

हम जॉन 14 में पारस्परिक निवास के साथ चौथे सुसमाचार में मसीह के साथ एकता के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं, और अधिक विशेष रूप से, पिता और पुत्र के पारस्परिक निवास और पिता और पुत्र और विश्वासियों के पारस्परिक निवास के साथ।

यूहन्ना 14:8 से 11 में, और फिर पद 20 और 23 में। ये पद बहुत सुन्दर हैं, और मैं 14 से शुरू करूँगा। एक, तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो।

परमेश्वर पर विश्वास रखो, और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। यदि ऐसा न होता, तो मैं तुम से कहता कि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ? और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ, वहाँ तुम भी रहो।

और तू जानता है कि मैं कहाँ जाता हूँ। थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है। तो फिर मार्ग कैसे जानें?” यीशु ने उससे कहा, “मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ।”

कोई पिता के पास नहीं आ सकता। यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते। अब से तुम उसे जानोगे और उसे देखोगे भी।

फिलिप्पुस ने उससे कहा, “हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिये बहुत है।” यीशु ने उससे कहा, “हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और तू मुझे अब तक नहीं जानता?” जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तू कैसे कहता है कि पिता को हमें दिखा? क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, वे अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है, या फिर कर्मों के कारण ही विश्वास करो। यीशु शिष्यों को अपने प्रति विश्वास को प्रोत्साहित करके सांत्वना देते हैं। वह उन्हें पिता के स्वर्गीय घर में उनके लिए जगह तैयार करने के लिए अपने प्रस्थान के बारे में बताते हैं।

दूसरे शब्दों में, वह चाहता है कि वे जानें कि वे पिता के हैं। पिता उन्हें अपनी उपस्थिति में स्वागत करेंगे, और यीशु उनके लिए लौटने का वादा करता है। यह सब आयत एक से तीन में है।

वह उनसे यह भी कहता है कि वे पिता के घर का रास्ता जानते हैं। वे स्वर्ग में पिता के घर का मार्ग जानते हैं, पद चार। थॉमस विरोध करता है, पद पांच, और फिर यीशु प्रसिद्ध 14:6 में कहते हैं, मैं ही मार्ग और सत्य और जीवन हूँ।

यह जॉन की सात में हूँ कथनों में से एक है। ये कथन ऐसे हैं जहाँ यीशु कहते हैं, मैं हूँ, और शब्द का उपयोग करते हैं, लेख का उपयोग करते हैं, और फिर एक विधेय नाममात्र का उपयोग करते हैं। सात अलग-अलग मैं हूँ कथन हैं, लेकिन सात अलग-अलग अर्थ नहीं हैं।

इसके तीन अलग-अलग अर्थ हैं, और यीशु ने तीनों अर्थों को इस एक आयत में संक्षेप में प्रस्तुत किया है, ताकि हम अन्य स्थानों पर अर्थों को न समझ पाएं। मैं मार्ग हूँ, और मैं पिता के स्वर्गीय घर की ओर जाने वाला मार्ग हूँ। इसका अर्थ है कि वह संसार का एकमात्र उद्धारकर्ता है।

पहला, दूसरा दूसरा, जो मैं कह रहा हूँ, वही अर्थ देता है, लेकिन स्वर्गीय चित्र में नहीं, बल्कि सांसारिक चित्र में, जहाँ यीशु यूहन्ना 10 में कहते हैं, वह भेड़शाला में प्रवेश का द्वार है। इसका मतलब है कि वह एकमात्र उद्धारकर्ता है। वह परमेश्वर के लोगों में प्रवेश का एकमात्र मार्ग है, एकमात्र उद्धारकर्ता।

मैं मार्ग हूँ, मैं सत्य हूँ। यीशु परमेश्वर का प्रकटकर्ता है, जो यूहन्ना के सुसमाचार के दो मुख्य विषयों में से एक है, साथ ही यह तथ्य भी है कि वह जीवनदाता है, और यही मैं जीवन हूँ का अर्थ है, लेकिन मैं सत्य हूँ। मैं परमेश्वर का प्रकटकर्ता हूँ।

हम इसे यूहन्ना 9 में देखते हैं, जहाँ यीशु ने एक अंधे व्यक्ति को चंगा करके इसे दर्शाया है, और फिर यीशु ने यह कहते हुए इसका दावा किया है, मैं जगत की ज्योति हूँ। यीशु ही मार्ग है, एकमात्र उद्धारकर्ता है। वह सत्य है, परमेश्वर का प्रकटकर्ता है।

वह जीवन है। यही अर्थ है अधिकतर “मैं हूँ” कथनों का। अर्थात्, वह अनन्त जीवन देने वाला है।

हम इसे अच्छे चरवाहे की छवि में देखते हैं। मैं अच्छा चरवाहा हूँ। मैं अपनी भेड़ों को अनन्त जीवन देता हूँ।

वे कभी नष्ट नहीं होंगे। और, बेशक, हम इसे पहले की चंगाईयों में देखते हैं। वह शरीरों को जीवन देता है, और इसी तरह, और सबसे महत्वपूर्ण बात, वह अपने लोगों को अनन्त जीवन देता है, और आप इसे अध्याय 11 में सबसे जोरदार तरीके से देखते हैं, जहाँ वह कहता है, मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ, और वह अपने दोस्त लाज़र को कब्र से उठाकर इसे साबित करता है।

यूहन्ना 14:6 उन सात कथनों में से एक है जो सभी सातों के अर्थों को सारांशित करता है। फिलिप एक ईश्वरीय दर्शन की मांग करता है। यीशु ही पिता के स्वर्गीय घर का एकमात्र मार्ग है, एकमात्र उद्धारकर्ता।

पिता को भी जानते। वरन अब से तुम उसे जानोगे, और उसे देख भी चुके होगे। (पद सात)

इस पर, फिलिप्पुस ने ईश्वरीय दर्शन के लिए प्रार्थना की—श्लोक आठ। निराश होकर, यीशु श्लोक नौ से 11 में उत्तर देते हैं।

हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तुम मुझे नहीं जानते? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तुम कैसे कह सकते हो कि पिता को हमें दिखाओ? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में हैं? मैं जो बातें तुमसे कहता हूँ, वे यह हैं कि मैं अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता जो मुझ में रहता है, अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है, या फिर कामों के कारण ही विश्वास करो।

यीशु को इस बात पर दुःख है कि इतने समय बाद भी, फिलिप, जो शिष्यों की ओर से बोलता है, हमें फिलिप पर बहुत कठोर नहीं होना चाहिए, यह नहीं समझता कि पुत्र को देखना पिता को देखना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुत्र ईश्वर को प्रकट करने वाला है। लेकिन इसके पीछे एक गहरा कारण है।

पद 10. मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है। एक बार फिर, यीशु पिता और पुत्र के परस्पर निवास की बात करता है।

शिष्यों को अदृश्य ईश्वर के ईश्वरदर्शन की आवश्यकता नहीं है, ईश्वर का दृश्य रूप जो एक आत्मा है और जो अदृश्य है। मुझे लगता है कि ईश्वरदर्शन, जिसका शब्द ही दृश्यता की बात करता है, अन्य इंद्रियों को भी शामिल कर सकता है, उदाहरण के लिए ईश्वर को सुनना, लेकिन इसे यही कहा जाता है, और शास्त्रों में ईश्वर के उन प्रकटनों में दृष्टि पर निश्चित रूप से जोर दिया गया है। हालाँकि ध्वनि और वाणी भी मौजूद हैं।

वैसे भी, उन्हें ईश्वरीय दर्शन की आवश्यकता नहीं है। वे देहधारी पुत्र को देखते हैं। उन्हें देहधारण प्राप्त हो चुका है।

उन्हें किसी ऐसे दृश्य की आवश्यकता नहीं है जो दूर चला जाए। उनके पास यीशु में अनन्त पुत्र का स्थायी अवतार है। चूँकि वह और पिता परस्पर एक साथ रहते हैं, इसलिए पुत्र को देखना पिता को देखने के समान है।

केवल पुत्र का अवतार ही उसे देखने में सक्षम बनाता है। अर्थात् पिता। क्षमा करें।

केवल पुत्र का अवतार ही पुत्र को देखने में सक्षम बनाता है, और पुत्र को देखकर, वे अदृश्य परमेश्वर को दृश्यमान होते हुए देखते हैं। पॉल अलग-अलग मुहावरों का उपयोग करता है, लेकिन वह कुछ समान कहता है। मसीह अदृश्य परमेश्वर की छवि है।

कुलुस्सियों 1:15 और इब्रानियों 1:3, मसीह ही है... बेटा, मुझे इन बातों को दिल से जानना चाहिए। इब्रानियों 1:3, परमेश्वर की महिमा की चमक और उसके स्वभाव की सटीक छाप।

इब्रानियों के लेखक, मैं मूल से सहमत हूँ; केवल परमेश्वर ही निश्चित रूप से जानता है कि वह कौन है, तीन सत्तों को संप्रेषित करने के लिए इन दो चित्रों का उपयोग करता है।

इब्रानियों 1 के संदर्भ में, मुख्य सत्य यह है कि पुत्र परमेश्वर का अंतिम मध्यस्थ है। वह पुराने नियम के मध्यस्थों, अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्गदूतों से बढ़कर है जो व्यवस्था देने में शामिल थे क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर है। एक छवि आकाश की ओर सूर्य को देखने से है और पुत्र, सूर्य, चमक, दीप्ति, परमेश्वर की महिमा का प्रकाश है जिसे सूर्य के रूप में चित्रित किया गया है, और फिर सिक्कों की ढलाई की दुनिया से एक छवि।

सूर्य बिल्कुल सही छाप है, वह सिक्का है, अगर आप चाहें तो, ईश्वर की प्रकृति का, जो रंग है। संदर्भ में मुख्य विचार: किरण सूर्य को प्रकट करती है, जो अदृश्य है क्योंकि आप इसे घूर नहीं सकते; आप अपनी रेटिना जला लेंगे। प्राचीन लोगों ने शायद उनमें से कुछ को कठिन तरीके से समझा, और बाकी ने सुनी। सूर्य वह सिक्का है जिस पर रंग की छाप होती है, जिसमें लचीली धातु होती है और हथौड़े से पीटा जाता है, इसलिए एक दीनार रंग से एक दीनार बनता है।

संदर्भ में, सूर्य मध्यस्थ है, ईश्वर का प्रकटकर्ता है, जो पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के मध्यस्थों, भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्गदूतों से भी आगे है; इब्रानियों 1:1 से लेकर वास्तव में 2:4 तक इब्रानियों 1 का अनुप्रयोग है। लेकिन सूर्य के पिता को प्रकट करने, रहस्योद्घाटन के मध्यस्थ होने के मुख्य विचार के साथ-साथ दो अन्य विचार भी हैं। नंबर एक सूर्य और पिता के बीच समानता है। किरण सूर्य है, जो अंतरिक्ष में फैली हुई है, और दीनार का सिक्का वह है जिसे डाई में डाला जाता है, जिसे दृश्यमान बनाया जाता है।

तो, रहस्योद्घाटन का मुख्य विचार, दूसरा विचार, मसीह का ईश्वरत्व, और पिता और पुत्र की समानता। तीसरा विचार अधीनता है। किरण अंतरिक्ष में भेजा गया सूर्य है, यह अदृश्य सूर्य नहीं है जो इसे सीधे देख रहा है।

इसी तरह, दीनार रंग नहीं है; यह रंग से आता है। इसलिए, जॉन और पॉल की शिक्षाओं के बीच एक ओवरलैप है। जब पॉल कहते हैं कि मसीह अदृश्य ईश्वर की छवि है, तो उनका मतलब है कि अवतार में, यीशु ईश्वर, पिता का दृश्यमान रहस्योद्घाटन है, जो एक अदृश्य आत्मा है।

और फिर, इब्रानियों 1:3, अलग-अलग छवियों के साथ, उसी सत्य को संप्रेषित करता है। यह केवल सूर्य का अवतार है जो उसे देखने में सक्षम बनाता है, और सूर्य को देखते हुए, वे अदृश्य परमेश्वर को दृश्यमान होते हुए देखते हैं। इसलिए, यीशु यूहन्ना 14:10 में कह सकते हैं, पिता जो उनके अंदर निवास करता है, पिता के कार्य करता है।

शिष्य पुत्र के साथ पारस्परिक रूप से निवास का आनंद लेंगे। यीशु ने पिता से अपने अनुयायियों को सत्य की आत्मा भेजने के लिए कहने का वादा किया है। वह उनके साथ रहेगा और उनमें रहेगा।

पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है, तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

पद 18, मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा। वे पुनरुत्थित पुत्र को देखेंगे, और उसके पुनरुत्थान के कारण, वे भी पुनरुत्थित जीवन का अनुभव करेंगे। क्योंकि मैं जीवित हूँ, पद 19, तुम भी जीवित रहोगे।

वे जी उठे हुए मसीह को देखेंगे, और उसके पुनरुत्थान के कारण, वे भी पुनरुत्थान जीवन का अनुभव करेंगे। अब पुनर्जन्म में, और युग के अंत में, कब्र से पुनरुत्थान में नई पृथ्वी पर अनन्त जीवन के लिए। तब यीशु कहते हैं, उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में हो, और मैं तुम में हूँ, श्लोक 20।

उस दिन तुम जानोगे कि मैं पिता में हूँ, और तुम मुझ में हो, और मैं तुम में हूँ। यहाँ पहली बार, विश्वासी ईश्वरीय सह-विरासत में फँस जाते हैं। सह-विरासत।

यीशु के जी उठने के बाद, उसके अनुयायी समझ जाएँगे कि वह पिता में वास करता है, यानी कि यीशु ईश्वरीय है। वे एक अद्भुत परिणाम भी समझ जाएँगे। वे मसीह में हैं, और वह उनमें है।

पेरिचोरेसिस सह-निवास की भाषा जो अब तक ईश्वरत्व के व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से इस्तेमाल की जाती थी, जॉन 6 और जॉन 10, को उन शिष्यों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया है जो पुत्र के साथ पारस्परिक निवास के एक रूप का आनंद लेंगे। मैं पारस्परिक निवास का एक रूप कहता हूँ क्योंकि, एक स्तर पर, दिव्य जीवन को साझा करने वाला त्रित्ववादी व्यक्ति केवल उनका है। हालाँकि, दूसरे स्तर पर, विश्वासी पुत्र और पिता और आत्मा के साथ संगति में प्रवेश करते हैं, और वे अब पुनर्जीवित प्रभु यीशु में विश्वास के द्वारा ऐसा करते हैं।

शिष्य पुत्र में होंगे जो जीवित मसीह के साथ आध्यात्मिक रूप से एकता में उसके साथ जुड़ा हुआ है, और वह उनमें वास करने के लिए सत्य की आत्मा से जुड़ जाएगा। श्लोक 17 और 20। पिता और पुत्र मसीहियों के साथ अपना घर बनाएंगे।

यह यूहन्ना में एक अनदेखा, अद्भुत, गर्म और अद्भुत मार्ग है। यहूदा, और यहूदा कितना खुश है जब इस तरह के शब्द उसके बाद आते हैं। यहूदा ने, इस्करियोती ने नहीं, उससे कहा, हे प्रभु, यह कैसे हो सकता है कि आप अपने आप को हम पर प्रकट करेंगे और दुनिया पर नहीं? हम इस संप्रभुता के मामले को नहीं समझते हैं।

यीशु ने उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम रखता है, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे। जो मुझसे प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन को नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, परन्तु पिता का है, जिसने मुझे भेजा है।” फिर वह पवित्र आत्मा के बारे में बात करता है।

एंद्रियास कोस्टेनबर्गर, जिन्होंने जॉन के सुसमाचार पर एक सहायक टिप्पणी लिखी है, ने लिखा, यह नए नियम में एकमात्र स्थान है जहाँ पिता और पुत्र दोनों को विश्वासियों के भीतर रहने के लिए कहा गया है। जब यीशु चले जाएँगे, तो वे अपने शिष्यों को अनाथ नहीं छोड़ेंगे। वे उनके पास आत्मा भेजेंगे, जिसे वे जानेंगे, जो उनके भीतर रहेगा और उनके भीतर रहेगा, श्लोक 16 से 18 तक।

इसके अलावा, वह उन्हें बेघर नहीं छोड़ेगा। कल्पना को न चूकें। श्लोक एक से तीन में, वह उनके लिए जगह तैयार करने के लिए पिता के स्वर्गीय घर जा रहा है, अगर आप चाहें तो स्वर्गीय हवेली में एक कमरा, लेकिन घर की कल्पना वापस आ गई है।

वह यहाँ वापस आता है। वे बेघर नहीं होंगे। इसके बजाय, पिता और पुत्र विश्वासियों के साथ अपना घर बनाने आएंगे।

यीशु फिर इस घरेलू आकृति का उपयोग करते हैं, अगर मैं इसे ऐसा कह सकता हूँ, एकता पर अपनी शिक्षा को मजबूत करने के लिए। जब यीशु पिता के पास चढ़ता है, तो वे दोनों परमेश्वर के लोगों में निवास करेंगे ताकि विश्वासियों को, उद्धारण, देवता की तत्काल उपस्थिति का अनुभव हो। लियोन मॉरिस ने अपने जॉन के सुसमाचार में कहा।

पौलुस का काम परमेश्वर के लोगों में रहने वाली आत्माओं पर ज़ोर देना होगा, सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से। यूहन्ना 15, यूहन्ना में हमारा चौथा अंश, मसीह के साथ एकता से संबंधित है। यीशु, दाखलता, विश्वासी, शाखाएँ।

यूहन्ना 15, 1 से 17. हमें पूरी बात को ध्यान में रखना चाहिए। मैं सच्ची दाखलता हूँ, और मेरा पिता दाख की बारी का रखवाला है।

जो शाखा मुझमें है, और जो फल नहीं देती, उसे वह काट डालता है, और जो फल देती है, उसे वह छांटता है ताकि और अधिक फल दे। जो वचन मैंने तुम से कहे हैं, उनके कारण तुम पहले से ही शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में।

जैसे डाली अपने आप फल नहीं दे सकती जब तक वह बेल में बनी न रहे, वैसे ही तुम भी तब तक फल नहीं दे सकते जब तक तुम मुझ में बने न रहो। मैं बेल हूँ और तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वही बहुत फल देता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और डालियाँ इकट्ठी करके आग में डाली जाती हैं, और जला दी जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो माँगो, वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। इसी से मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, और इस प्रकार मेरे चेले ठहरो।

जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने भी तुम से प्रेम रखा। मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

ये बातें जो मैं ने तुम से कहीं हैं, इसलिये कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

यदि तुम वही करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है, परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि जो कुछ मैं ने अपने पिता से सुना, वही तुम्हें बता दिया है। तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और नियुक्त किया, कि तुम जाकर फल लाओ, और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।

ये बातें मैं तुम्हें इसलिये आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो जान लो कि उसने पहिले मुझ से बैर रखा, क्योंकि उसने तुम से पहिले मुझ से बैर रखा। यदि तुम संसार के हो, तो संसार तुम्हें अपना जानकर प्रेम रखेगा; परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं हो, वरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।

मैंने इसे श्लोक 19 तक आगे बढ़ाया है। इन श्लोकों में 11 बार 'स्थिर रहना' शब्द आता है। यह अविश्वसनीय है।

और इनमें से कई प्रयोग मसीह में विश्वासियों के आपसी निवास से संबंधित हैं। यीशु, सच्ची दाखलता। पुराने नियम में इस्राएल को प्रभु की दाख की बारी के रूप में चित्रित किया गया है, जिसकी तुलना यशायाह 5:1 से 7 से की गई है, तथा कई अन्य अंश भी पृष्ठभूमि हैं।

कभी-कभी, इस्राएल को दाखलता कहा जाता है। यीशु खुद को इस्राएल की पूर्णता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यीशु सच्ची दाखलता है, पुराने नियम के इस्राएल की पूर्णता।

जबकि इस्राएल असफल रहा, वह सफल हुआ। पिता अंगूर की खेती करने वाला है। वह पुत्र के मिशन का निर्देशक है, और यह भाषा पिता और पुत्र के बीच सामंजस्य को दर्शाती है।

यीशु ने अपने अंदर दो तरह की शाखाओं का चित्रण किया है। यह अभी तक तकनीकी रूप से मसीह के साथ एकता नहीं है। यह वाइनकल्चरल इमेजरी का हिस्सा है।

पहली शाखा में कोई फल नहीं होता, इसलिए पिता उसे बेल से हटा देता है। दूसरी शाखा में फल लगते हैं, इसलिए पिता उसे काटता है ताकि वह ज़्यादा फल दे, इसके दो अच्छे कारण हैं। दरअसल, दो से ज़्यादा, लेकिन अभी के लिए सिर्फ़ दो ही काफ़ी होंगे।

दो अच्छे कारणों से, यह उद्धार के नुकसान की बात नहीं करता है। सबसे पहले, पूरे पवित्रशास्त्र में, हालाँकि परमेश्वर के लोग फलदायी होने की डिग्री प्रदर्शित करते हैं, मत्ती 13:23, 30 गुना, 60

गुना और 100 गुना, फलहीनता का अर्थ है दिव्य जीवन की अनुपस्थिति। मत्ती 7:16 और 19, कोई फल नहीं होना जीवन नहीं दिखाता है।

फिर से, मैं यह कहूँगा कि मिट्टी के दृष्टांत में, परमेश्वर के लोगों के लिए फलदायी होने की अलग-अलग डिग्री हैं। परमेश्वर की कृपा और कार्य के कारण कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक फलदायी होते हैं। फिर भी, मत्ती 7:17, हर स्वस्थ पेड़ अच्छा फल देता है, लेकिन बीमार पेड़ बुरा फल देता है।

एक स्वस्थ पेड़ खराब फल नहीं दे सकता, न ही एक बीमार पेड़ अच्छा फल दे सकता है। हर पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता उसे काटकर आग में डाल दिया जाता है। यह न्याय की तस्वीर है।

इस प्रकार, आप उन्हें उनके फलों से पहचान लेंगे। ईसाइयों के लिए फलदायी होने की कई डिग्री हैं, लेकिन कोई फल नहीं, मैं इसे पादरी के रूप में कहता हूँ, एक बहुत बुरा संकेत है। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, कोई फल नहीं, जो कि यीशु यहाँ दिखाता है, का अर्थ है कोई उद्धार नहीं, कोई जीवन नहीं।

जीवन फलदायी होने में प्रकट होता है। दूसरा, पद 8 में, फल-फूलना शिष्यत्व का प्रमाण है। इससे मेरे पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत फल लाओ और इस प्रकार मेरे शिष्य साबित हो।

अगर वे कोई फल नहीं देते, तो वे साबित करते हैं कि वे उसके शिष्य नहीं हैं, यही बात है। फल देना शिष्यत्व का प्रमाण है, और कोई भी फल उस व्यक्ति को धोखा नहीं देता जो जीवन देने वाले तरीके से कभी भी बेल से जुड़ा नहीं था। हाँ, कल्पना में, वे बेल से जुड़े हुए हैं क्योंकि कल्पना की प्रकृति ऐसी है।

सबसे पहले नज़र आने वाली निष्फल शाखा यहूदा इस्करियोती है। शैतान से प्रेरित होकर, वह यीशु को धोखा देने के लिए चला गया, यूहन्ना 13:27-30। यीशु ने अपने साथी शिष्यों को मूर्ख बनाया, यूहन्ना 13, 29।

जब वह यीशु को धोखा देने के लिए बाहर गया तो उन्हें उस पर शक भी नहीं हुआ, लेकिन उसने यीशु को मूर्ख नहीं बनाया, यूहन्ना 6:64, 70-71। क्या मैंने तुम्हें, 12 को नहीं चुना, और तुम में से एक शैतान है? वह शुरू से ही जानता था कि कौन उस पर विश्वास नहीं करेगा। फलहीन शाखा का बेल में होना, 15:2, यीशु के साथ घनिष्ठ संपर्क को दर्शाता है, हालाँकि यह भविष्य के धर्मत्यागियों से संबंधित है, खासकर यहूदा से, जिसे पैसे की थैली सौंपी गई थी, लेकिन वह अविश्वसनीय था।

ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे साथी शिष्यों को पता चले कि यहूदा अविश्वसनीय था, अंततः अविश्वसनीय था, और अंततः विश्वासघाती था। मैथ्यू एक पूर्व कर संग्रहकर्ता था। मैथ्यू पागल हो गया होगा या यहूदा को मार डाला होगा ताकि उसे पैसे की थैली मिल जाए, यह जानते हुए कि वह एक चोर था।

नहीं। 12:6 के अनुसार, वह यीशु और उसके शिष्यों को दिए गए पैसे से अपनी मदद करता था। कितना बड़ा बदमाश।

यह एक अपूर्ण काल है जो उसके सामान्य कार्य, उसके चल रहे कार्य को दर्शाता है। 13:2 में, शैतान विश्वासघात को भड़काता है। यह कोई संयोग नहीं है कि शैतान ने यहूदा के जीवन में प्रवेश किया और अन्य शिष्यों में नहीं।

21 में, वह यीशु को धोखा देने के लिए उसके पास आता है। अध्याय 13:13-21 में, 26-30 में, वह गलत काम करने जाता है। मुझे लगता है कि मैंने गलत कहा।

13:21 में यीशु कहते हैं, तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। उन्होंने विश्वासघात की घोषणा की। विश्वासघाती मौजूद है।

26-30 वह जगह है जहाँ शैतान उसके अंदर प्रवेश करता है, और यहूदा प्रभु को धोखा देने के लिए चला जाता है। यीशु और शिष्यों का परस्पर एक साथ रहना। यीशु के शुद्ध करने वाले वचन ने ग्यारह को शुद्ध कर दिया है।

अब वह उनसे कहता है, श्लोक 4, तुम मुझमें बने रहो और मैं तुममें। जैसे एक शाखा अपने आप फल नहीं दे सकती जब तक वह बेल में बनी न रहे, वैसे ही तुम भी नहीं दे सकते जब तक तुम मुझमें बने न रहो। जैसे बेल से अलग की गई शाखा फलहीन होती है, वैसे ही मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते, श्लोक 5। झूठी शाखाओं को काटकर नरक की आग में डाल दिया जाता है, श्लोक 6। यीशु में बने रहने का क्या मतलब है? यहाँ वे स्थान दिए गए हैं जहाँ यह होता है।

पद 4, तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से फल नहीं ला सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो फल नहीं ला सकते, पद 4। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वही बहुत फल लाता है, पद 5। यदि कोई मुझ में नहीं बना रहता, पद 6, यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो, वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसे ही मैंने भी उस से प्रेम रखा।

मेरे प्रेम में बने रहो, श्लोक 9. यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उसके प्रेम में बना रहता हूँ। तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना और नियुक्त किया कि तुम जाओ और फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे। श्लोक 9 में, ऐसा लगता है कि कुंजी मेरे लिए कुंजी है।

यूहन्ना 15 की आयत 9 में यीशु ने बताया कि उसमें बने रहने का क्या मतलब है। उसमें बने रहने का मतलब है उसके प्यार में बने रहना, उसके साथ संगति में बने रहना, प्यार करना और बेशक, उसकी आज्ञा का पालन करना, जैसा कि वह पिता से करता है। बेस्ली मरे ने यूहन्ना पर एक टिप्पणी लिखी, और उन्होंने लिखा, जॉर्ज बेस्ली मरे, उद्धरण, यीशु में बने रहना भी उसके प्यार में बने रहना है, ठीक वैसे ही जैसे इस पूरे जीवन में, यीशु पिता के प्यार में बने रहे, उद्धरण बंद करें।

यीशु ने इस अंश में पिता और पुत्र के परस्पर निवास का उल्लेख नहीं किया है। जाहिर है, यूहन्ना का उद्देश्य अपने सुसमाचार के हर अध्याय में एक पूर्ण व्यवस्थित धर्मशास्त्र देना नहीं था। मैं मज़ाक कर रहा हूँ।

यह बाइबल का उद्देश्य नहीं है। यह एक कहानी बताती है। फिर भी, 2 तीमुथियुस 3, 16, 17 हमें बताता है कि सभी शास्त्र परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं और लाभदायक हैं, क्योंकि सबसे पहले उल्लेखित बात है शिक्षा।

धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र सीखना उचित है, लेकिन हमें इसे बहुत सावधानी से करने की आवश्यकता है। इसके बजाय, यीशु अपने और विश्वासियों के आपसी प्रेम में बने रहने पर ध्यान केंद्रित करता है। तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में, पद 4। आपसी बने रहना आपसी निवास के विचार को ओवरलैप करता है।

मसीह में बने रहना, उसमें बने रहना है, लेकिन यह इससे भी बढ़कर है। इसमें एक ओवरलैप है, लेकिन यह एक ओवरलैप है। बने रहना एक बड़ा चक्र है, जिसका मसीह में बने रहना एक उपसमूह है। इसलिए बने रहने का मतलब है अंदर रहना, लेकिन अंदर रहने का मतलब जरूरी नहीं कि बने रहना हो।

लेकिन बने रहना सिर्फ उसमें रहने से कहीं ज़्यादा है। इसका मतलब है उससे प्यार करना। इसी तरह, अगर वह हममें बना रहे तो उसका हमसे प्यार करना जारी रखना है।

तो फिर बने रहना एक वाचागत अवधारणा है जो बेटे के अपने लोगों से प्यार करते रहने और उनके द्वारा उससे प्यार करते रहने की बात करती है। मसीह के साथ एकता की कई तस्वीरों की तरह, यह भी सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों है। पद 5, मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो, सामूहिक।

जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें बना रहता हूँ, वही बहुत फल लाता है, इत्यादि, एकवचन। दोनों सत्य हैं। फल क्या है? इस परस्पर बने रहने के परिणाम बेल और शाखाओं और अंगूरों की कल्पना के अनुसार फल के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

यीशु की आज्ञाओं का पालन करना, पद 10, फलों में से एक है। दूसरे विश्वासियों के लिए प्रेम दूसरा है, पद 12 से 14। साथ ही, यीशु के साथ एक मधुर व्यक्तिगत संबंध में बने रहने से मिलने वाला महान आनंद, पद 11।

हालाँकि यूहन्ना 15 में बार-बार ज़ोर शिष्यों की प्रतिक्रिया और वाचा के पालनकर्ताओं के रूप में आज्ञाकारिता पर है, लेकिन ईश्वरीय संप्रभुता को नहीं छोड़ा गया है। इसमें मानवीय ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दिया गया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन आयत 16 और 19 में संप्रभुता का एक नोट शामिल है।

उनकी वाचा, प्रभु यीशु ने उन्हें चुना और नियुक्त किया कि वे फल पैदा करें और उनका फल बना रहे। उन्होंने फल पैदा करने का एक और परिणाम जोड़ा, जो प्रार्थना का उत्तर था। मैं कह सकता

हूँ कि जो बात मुझे यूहन्ना 15:16 को न केवल सेवा के लिए शिष्यों को चुनने के उदाहरण के रूप में देखने के लिए प्रेरित करती है, बल्कि वास्तविक उद्धार के लिए पद 19 है।

यदि आप संसार के हैं, तो संसार आपको अपना समझकर प्यार करेगा, लेकिन आप संसार के नहीं हैं, बल्कि मैंने आपको संसार से चुना है। इसलिए, संसार आपसे घृणा करता है। जैसा कि डॉन कार्सन ने अपनी पुस्तक दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी में दिखाया है, जॉन के सुसमाचार में बाइबिल के दृष्टिकोण का उद्देश्य शास्त्र में एक अनूठा कथन है कि यीशु चुनाव के लेखक हैं।

पिता और पुत्र तथा पुत्र और विश्वासियों का आपसी निवास यूहन्ना 17:20 से 26 तक। यह हमारा अगला विषय है, और हमारे लिए अपने अगले व्याख्यान में इस पर चर्चा करना अच्छा रहेगा। धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 10 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, जॉन का सुसमाचार, जॉन 14 और 15।